

UGC 45080

Vol - 10/Jan 2018

ISSN 2321 5054

History Times

A Peer Reviewed & UGC Approved Research Journal
of History & Archaeology

Editors

Prof. Naveen Gideon
Prof. B. K. Shrivastava



Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)
Regd. No. 06/09/01/09369/12

CONTENTS

1.	Shilpkar Castes in Uttarakhand : Social and Economic Exclusion <i>Isha Tamta</i>	1
2.	An Overview of Situation of Tribal Women With Special Reference to M P <i>Neha Rajput</i>	6
3.	भारत में महिला शिक्षा की प्रगति-प्राचीन काल से आधुनिक काल तक <i>अभिषेक अग्रवाल</i>	13
4.	रघुनाथ राव : सागर का अंतिम सूबेदार <i>डॉ. बी.के. श्रीवास्तव</i>	21
5.	कमला राजा महाविद्यालय के चित्रकला विभाग में दर्शित सिंधियाकालीन संस्कृति की चित्रात्मक झांकी <i>डॉ. कुमकुम माथुर</i>	28
6.	सिंधिया राजाओं के ग्वालियर किला टकसाल से जारी ताँबे के सिक्के : एक अध्ययन <i>डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ</i>	32
7.	सिंधिया अथवा सरदार स्कूल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन <i>डॉ. मीना श्रीवास्तव</i>	38
8.	बुन्देलखण्ड प्रारम्भ से चम्पतराय तक <i>डॉ. नवीन गिडियन</i>	43
9.	विदेशी यात्रियों के विवरण में मराठाकालीन छत्तीसगढ़ <i>डॉ. पंकज सिंह</i>	49
10.	पं. राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल की साहित्य साधना <i>डॉ. सीमा पाण्डेय</i>	56
11.	कोटा के जागीरदारों की विभिन्न श्रेणियाँ एवं उपाधियाँ <i>सुनीता ओझा</i>	63
12.	त्रिपुरी के कलचुरियों का ऐतिहासिक भूगोल <i>डॉ. वन्दना गुप्ता</i>	67
13.	परमार काल में शाक्त धर्म <i>डॉ. विभा राठीड़</i>	79

Prof. Naveen Gideon

Editor, "History Times"

Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)

Cell : 9425020650, E-Mail : historytimes2010@gmail.com

रघुनाथ राव : सागर का अंतिम सूबेदार

डॉ. बी.के. श्रीवास्तव

प्रोफेसर - इतिहास

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

1782 ई. में बिसाजी गोविन्द चान्दोरकर की मृत्यु के पश्चात् बालाजी गोविन्द ने अपने बेटे रघुनाथ राव उर्फ आबा साहिब को सागर सूबे के शासन की जिम्मेदारी सौंपी।¹ रघुनाथ राव ने सागर पहुँचते ही सबसे पहले मोरो विश्वनाथ डिंगनकर को बिसाजी की मौत के जिम्मेदार गंगागीर गोसाई एवं नरहरशाह को पकड़ कर लाने की जिम्मेदारी सौंपी।² मोरो विश्वनाथ ने इन्हें पकड़ कर सागर भेज दिया। गंगागीर गोसाई को हाथी तले कुचलवा दिया गया तो नरहरशाह को खुरई किले में बन्दी बनाया गया।³ रघुनाथ राव को सागर सूबे का शासन सुचारु रूप से संचालित करने के लिये निम्न व्यक्तियों का सहयोग मिला।

1. दीवान-केशोमहादेव चान्दोरकर
2. फड़नवीस-रघुनाथकाशी अंबेकर
3. तोपखाना प्रभारी-तुको गोविन्द बरजे एवं विष्णु कान्हो देसाई
4. मजूमदार-शिवराम अप्पाजी करमलकर, बच्छयाजी शिवदेव सप्रे एवं रामचन्द्र कृष्णा लघाटे
5. पोटनिस-लक्ष्मण कृष्णा लघाटे
6. सहायक-केशो भीकाजी दुविधो

बिसाजी गोविन्द चान्दोरकर की मृत्युपरान्त उनकी पत्नी भागीरथी बाई ने रंगनाथ को गोद लिया। रंगनाथ की अकाल मृत्यु हो गई।⁴ भागीरथी बाई ने रंगनाथ के छोटे भाई विनायक राव को गोद लिया।⁵ यही विनायक राव चान्दोरकर सागर का अंतिम दीवान था।⁶ विनायक राव का जन्म 1775 ई. में हुआ था। उसने रघुनाथ राव खेर की ओर से सागर सूबे के दीवान का पदभार संभाला।

सागर पर अमीर खाँ पिण्डारी का आक्रमण

यशवन्तराव होल्कर से संबंध अमीर खाँ पिण्डारी ने सागर पर 1799 ई. में आक्रमण किया। सागर के इतिहास की इस दुःखान्त घटना का आँखों देखा वर्णन लुटेरे दल के एक व्यक्ति ख्यालीराम ने किया है।⁷ सागर के दीवान विनायकराव चान्दोरकर ने अमीर खाँ के आक्रमण का बहादुरी से सामना किया। इस युद्ध में लक्ष्मण कृष्ण मजूमदार एवं बयाजी शिवदेव घायल हुये तथा सागर सेना के कई सिपाही मारे गये। सागर नगर लगभग 1 माह तक लूटकर डकैती तथा आगजनी का शिकार होता रहा। पूरा शहर जला दिया गया। सागर के पुरुष एवं महिला निवासियों पर अपमान, प्रताड़ना तथा अत्याचार का पहाड़ टूट पड़ा।⁸

बालाजी गोविन्द को जब यह पता चला तो उसने तुरन्त अपने पुत्र रघुनाथ राव के अधीन एक सेना विनायक राव की सहायतार्थ भेजी। इन्होंने भौंसले से भी सहायता मांगी। उन्होंने भौंसले को मण्डला, चौरागढ़ एवं तेजगढ़ के किले सौंपने के अलावा 3 लाख रुपया नजराना देना स्वीकार किया।⁹ बेनीसिंह भौंसले की सेना